**पाठ-10**

# कोई नहीं पराया

**– गोपालदास 'नीरज'**

**आइए सीखें**

**■ मानवीय और नैतिक मूल्य ■ काव्य में गेयता एवं सरसता ■ विलोम शब्द।**

कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।
मैं न बँधा हूँ देश काल की जंग लगी जंजीर में,
मैं न खड़ा हूँ जाति-पाँति की ऊँची-नीची भीड़ में।
मेरा धर्म न कुछ, स्याही-शब्दों का सिर्फ गुलाम है,
मैं बस कहता हूँ कि प्यार है तो घट-घट में राम है।
मुझसे तुम न कहो, मन्दिर-मस्जिद पर मैं सर टेक दूँ।
मेरा तो आराध्य आदमी, देवालय हर द्वार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।
कहीं रहे, कैसे भी, मुझको प्यारा यह इंसान है,
मुझको अपनी मानवता पर बहुत-बहुत अभिमान है।
अरे नहीं देवत्व, मुझे तो भाता है मनुजत्व ही,
और छोड़ कर प्यार नहीं स्वीकार सकल अमरत्व भी।
मुझे सुनाओ तुम न स्वर्ग-सुख की सुकुमार कहानियाँ,
मेरी धरती, सौ-सौ स्वर्गों से ज्यादा सुकुमार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।

**शिक्षण संकेत**

**▸ कविता की दो-दो पंक्तियाँ छात्रों से पढ़वाएँ ▸ कविता को शुद्ध उच्चारण और सहज प्रवाह में लयपूर्वक प्रस्तुत करना सिखाएँ ▸ कविता में आए कठिन शब्दों का उच्चारण कराएँ ▸ कविता का हाव-भाव के साथ छात्रों से वाचन कराएँ ▸ कविता का भाव छात्रों के सहयोग से स्पष्ट करें ▸ परिवार और घर के महत्व से परिचित कराएँ।**

मैं सिखलाता हूँ कि जियो और जीने दो संसार को,
जितना ज्यादा बाँट सको तुम, बाँटो अपने प्यार को।
हँसो इस तरह, हँसे तुम्हारे साथ दलित यह धूल भी,
चलो इस तरह कुचल न जाय पग से कोई शूल भी।
सुख न तुम्हारा सुख केवल, जग का भी उसमें भाग है,

फूल डाल का पीछे, पहले उपवन का श्रृंगार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।

**शब्दार्थ**

**पराया**=जो अपना न हो, अपने से भिन्न। **आराध्य**=पूज्य, वन्दनीय। **देवालय**=मंदिर। **अभिमान**=गर्व। **देवत्व**=देवों के समान। **मनुजत्व**=मनुष्य के स्वाभाविक गुण, मनुष्यता। **अमरत्व**=कभी नष्ट न होने वाला। **उपवन**=बाग, उद्यान। **सुकुमार**=कोमल, मृदु। **भाता है**=प्रिय है, अच्छा लगता है।

## अनुभव विस्तार

### वस्तुनिष्ठ प्रश्न

**1. ( क ) सही जोड़ी बनाइए—**

- घर – मनुजत्व
- देश – पाँति
- जाति – काल
- देवत्व – संसार

**( ख ) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—**

- कहीं रहे कैसे भी मुझको प्यारा यह ....... है। (इंसान/भगवान)
- ............ डाल का पीछे पहले उपवन का श्रृंगार है। (शूल/फूल)
- मेरी धरती सौ-सौ स्वर्गों से ज्यादा.......... है। (सुकुमार/कठोर)
- कोई नहीं पराया......... सारा संसार है। (मेरा घर/मेरा परिवार)

### अति लघु उत्तरीय प्रश्न

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—**

(क) कवि ने घर किसे कहा है?
(ख) कवि को किस बात का अभिमान है?
(ग) कवि ने अपना आराध्य किसे माना है?
(घ) धरती किससे भी ज्यादा सुकुमार है?
(ङ) 'कोई नहीं पराया' कविता का मूल भाव क्या है?

**लघु उत्तरीय प्रश्न**

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में दीजिए—**
   (क) कवि ने अपने धर्म को स्याही और शब्दों का गुलाम क्यों नहीं माना?
   (ख) देशकाल को जंग लगी जंजीर क्यों कहा गया है?
   (ग) घट-घट में राम कहकर कवि कौन-सा भाव व्यक्त करना चाहता है?
   (घ) 'जियो और जीने दो' के लिए कवि क्या बाँटने को कहता है?
   (ङ) 'मानवता का मार्ग सर्वश्रेष्ठ है।' स्पष्ट कीजिए।

**भाषा की बात**

4. **निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—**
   आराध्य, भीड़, स्वीकार, मन्दिर, शृंगार, स्वर्ग, सुकुमार
5. **निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए—**
   सियाही, अभीमान, कहानीया, इनसान, शुल
6. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए—**
   जाति-पाँति, घट-घट, आराध्य, ऊँची-नीची
7. **निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थी शब्द लिखिए—**
   ऊँची, अपना, शूल, स्वीकार, शुभ, न्याय, पूर्ण
8. **उचित शब्द लगाकर खाली स्थान भरिए—**
   - हरीश ने गमलों में ......... लगवाए। (पौधा/पौधे)
   - सर्दी की .......... लम्बी होती हैं। (रात/रातें)
   - राजा दशरथ की तीन .......... थीं। (रानी/रानियाँ)
   - इस ................. में मेरी कहानी छपी है। (पुस्तक/पुस्तकों)
9. **वाक्यों के सामने दिए गए सर्वनामों के उपयुक्त रूप लगाकर वाक्य पूरे कीजिए—**
   - कल ........... तबियत ठीक नहीं थी। (मैं)
   - उन्होंने कहा, "ये सब ......... मित्र हैं।" (हम)
   - उसने .......... को बुला लिया होगा। (कोई)
   - अनुराग को बुलाओ .......... बाज़ार भेजना है। (वह)
   - दरी को पड़ी रहने दो .......... मत उठाओ। (यह)

***अब करने की बारी***

- कविता कंठस्थ कर शाला में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अवसर पर सुनाइए।
- इस कविता के भाव साम्य अनुसार अन्य कविताएँ संकलित कर कंठस्थ कीजिए।
- मानवीय गुणों का चार्ट बनाकर कक्षा में लगाइए।

❑❑